P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-9*(Part-2) May- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

# वैदिक वाङ्मय में पर्यावरणीय तथ्य

**जय सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
राजकीय महिला पी0जी0 कालेज,
अम्बारी, आजमगढ़,(उ0प्र0),
भारत

**सारांश**

वेद विश्व के प्राचीनतम् ग्रन्थ हैं। वैदिक मन्त्रों के दृष्टा ऋषियों ने प्रकृति के विविध रूपों को साधना का माध्यम बनाया है। अग्नि और पृथ्वी को देवता मानकर उपासना की तो इन्द्र एवं वरुण इत्यादि देवताओं को विभिन्न तत्वों के देवता मानकर उनकी स्तुति की।

ऋग्वेद में ऋषि प्रार्थना करता है कि जल यज्ञ के लिये सुखदाता हो, पीने योग्य बने तथा हमारी शुद्धि के लिये वृष्टि करे। यजुर्वेद में ऋषि प्रकृति के तत्वों – भू, जल, अन्तरिक्ष आदि से प्रार्थना करता है कि वह प्रदूषण मुक्त होकर हम सभी का कल्याण करे। अथर्ववेद में कहा गया है कि जल, वायु तथा औषधियाँ पर्यावरण के संघटक तत्व हैं जो प्रत्येक लोक को जीवन रक्षा के लिये आवश्यक हैं।

ब्राह्मण, आरण्यक एवं उपनिषद् ग्रन्थों में भी पर्यावरण के विभिन्न तत्वों– पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि एवं आकाश के महत्व के बारे में वर्णन किया गया है तथा उनके शुद्ध एवं हितकारी होने की कामना की गयी है।

स्पष्ट है कि आज के सहस्रों वर्ष पूर्व हमारे वैदिक ऋषि पर्यावरण के प्रति न केवल जागरूक थे अपितु प्रकृति के तत्वों के शुद्ध रहने एवं उनके संरक्षण के लिये भी कामना करते थे।

**मुख्य शब्द :** वेद, मन्त्र, ऋषि, देवता, पर्यावरण, प्रकृति के तत्व।

**प्रस्तावना**

हमारे प्राचीनतम् ग्रन्थ वेदों में विश्व का सम्पूर्ण ज्ञान अनुस्यूत है। वैदिक ऋषि अर्थपूर्ण दार्शनिक,उच्च कोटि के वैज्ञानिक तथा अच्छे साहित्यिक थे। भूत व भविष्य दोनों के अच्छे ज्ञाता थे। यही कारण है कि उनके समय में पर्यावरण की कोई समस्या न होने के बावजूद उन्होंने प्रकृति के प्रत्येक तत्व के संरक्षण की आवश्यकता बतायी है।

वैदिक वाङ्मय में प्रकृति के पाँच तत्वों पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। वेदों में जहाँ एक ओर अग्नि, पृथ्वी और वायु को देवता मानकर उपासना की गयी है तो इन्द्र,, वरुण, पर्जन्य इत्यादि देवताओं को विभिन्न तत्वों के देवता मानकर उनकी स्तुति की गयी है।वैदिक ऋचा यह कहती है कि शुद्ध जल औषधि से पूर्ण, अन्न से समृद्ध करने वाला तथा हमारे दोषों का निवारण करने वाला है। ऋषि जल से प्रार्थना करता है कि वह यज्ञ के लिये सुखदाता हो, पीने योग्य बने, हमारी शुद्धि के निमित्त वृष्टि करे।

शं नो देवीरभीष्टये आपो भवन्तु पीतये। शं योरभिस्रवन्तु नः।[1]

ऋग्वेद में ऋषि सूर्य से प्रार्थना करता है कि वह शरीर की रक्षा करने वाली औषधियों को पुष्ट करे, जिससे हम स्वस्थ रहते हुए दीर्घ काल तक सूर्य के दर्शन कर सकें।

आपःपृणीतभेषजं वरुथं तन्वे मम। ज्योक्चसूर्यं दृशे।[2]

ऋग्वेद में कहा गया है कि शुद्ध जल से असाध्य रोग भी दूर हो जाते हैं। अतः जल प्रदूषण को रोकना चाहिए।

आपो विश्वस्य भेषजीः।तास्त्वामुक्षन्तु क्षेत्रियात्।[3]

अथर्ववेद में पर्यावरण के पर्याप्त तथ्य प्राप्त होते है। अथर्ववेद के अनुसार जल, वायु एवं औषधियाँ ये तीन पर्यावरण के संघटक तत्व हैं। इन तीनों को देवताओं ने पृथ्वी के भरण –पोषण के लिये प्रतिष्ठित किया है। अथर्ववेद में पर्वत, जल, वायु, पर्जन्य एवं अग्नि पर्यावरण को शुद्ध करने वाले तत्वों के रूप में वर्णित हैं।

ये पर्वता सोमपृष्टा आपः वात पर्जन्य आदिग्नस्ते कव्यादमशीशमन्।[4]

इस धरा के समस्त प्राणियों के लिये वायु का विशेष महत्व है।वेदों में वायु की शुद्धि पर विशेष बल दिया गया है।ऋग्वेद में ऋषि कहता है कि वायु

औषधि बन हमारे हृदय में आये। वह हमारे लिये मंगलकारी एवं कल्याणकारी हो। वायु हमें आयुष्य प्रदान करे।

वात आ वातु भेषजं शम्भु मयोभु नो हृदे।
प्र ण आयूँ षि तारिषत्।[5]

शुक्ल यजुर्वेद में स्वच्छ वायु के महत्व के बारे में विशेष रूप से वर्णन किया गया है। ऋषि ने 'शं नो वातः पर्वताम्' के माध्यम से शुद्ध वायु के महत्व को प्रतिपादित किया है।[6]

ऋग्वेद में ऋषि कहता है कि हे वायु!तुम्हारे पास अमृत निधि है, उससे हमें जीवनी शक्ति प्रदान करो ।[7] स्पष्ट है कि इससे यहाँ प्राणि मात्र के लिये शुद्ध वायु के संरक्षण के महत्व पर विशेष बल दिया गया है।वैदिक ऋषि वायु में सभी प्रकार की औषधियों को विद्यमान मानता है तथा प्रार्थना करता है कि वायु संवाहक बन औषधियों को हमारे पास लाये और हमारे व्याधि रूपी पापों का निवारण करें।

हमारी संस्कृति में विभिन्न प्रकार के वृक्षों को पूजनीय माना गया है।पर्यावरण संरक्षण की दृष्टि से भी वृक्षों का महत्व अत्यधिक है।ऋग्वेद में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण का शमन करते हैं, पक्षियों का भरण –पोषण करते हैं।अतः वृक्षों काटना उचित नहीं।

मा काकम्बीरमुद्वृहो वनस्पतिमशस्तीर्वि हि नीनशः।
मोत सूरो अह एवा चन ग्रीवा आदधते वेः।।[8]

अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में पृथिवी को देवता मानकर उससे पहाडियों, हिमाच्छादित पर्वतों एवं वनों को जीवमात्र के लिये कल्याणकारी बनाने के लिये प्रार्थना की गयी है।

'गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोऽरण्यं ते पृथिवि स्योनमस्तु'[9]

वैदिक ऋचाओं में वायु तथा सूर्य को जीवन के लिये आवश्यक माना गया है। अथर्ववेद में वायु तथा सूर्य को सभी रोगों को नष्ट करने वाले तत्वों के रूप में वर्णित किया गया है। आज वायु प्रदूषण की समस्या विश्व के प्रत्येक शहर में है। भारत के छोटे–छोटे कस्बों में भी वायु प्रदूषण की समस्या बहुत विकट है। वायु प्रदूषण के कारण ही सूर्य की पराबैंगनी किरणें ओजोन परत को धीरे–धीरे नष्ट कर रही हैं। ओजोन परत के नष्ट होने से सूर्य की पराबैंगनी किरणें सीधे पृथ्वी पर आती हैं और यहाँ का न केवल तापमान बढ़ाती हैं अपितु कई तरह के रोगों को भी उत्पन्न करती हैं।अतः वायु प्रदूषण को रोकना हमारा प्रथम कर्तव्य है। हमारे प्राचीन मनीषियों ने ओजोन परत को वैदिक काल में ही पहचान लिया था, तथा उसके लिये 'उल्ब' शब्द का प्रयोग किया था।

"महत् तदुल्बं स्थविरं तदासीद्,येनाविष्टितम् प्रविवेशिथापः।"[10]

भौतिकतावादी चका–चौंध में खोया हुआ मनुष्य अपनी सुख–सुविधाओं को जुटाने के लिये प्राकृतिक संसाधनों का निरन्तर दोहन कर रहा है। नये–नये आविष्कारों के कारण प्राकृतिक सम्पदायें धीरे–धीरे नष्ट हो रही हैं। मानव प्रकृति का दोहन न करके पूरी तरह शोषण कर रहा है।

मनुष्य निरन्तर वनों को काट रहा है,तालाबों, पोखरों को पाट रहा है, नदियों का प्रवाह बन्द हो रहा है, वे सूख रही हैं। कल–कारखानों, वाहनों से निकलते हुए धुएँ से वातावरण विषाक्त हो रहा है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या विकराल रूप धारण कर चुकी है । प्रदूषण के कारण जलवायु प्रभावित हो रही है। कहीं सूखा तो कहीं बाढ आ रही है। हमारे देश के बहुत से भागों में पीने का पानी सुलभ नहीं हो पा रहा है। प्रदूषण के कारण तरह–तरह के रोग, महामारियाँ फैल रही हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि आज की इस भयावह स्थिति का आभास वैदिक ऋषियों को हो गया था, सम्भवतः इसीलिये अथर्ववेद में पर्यावरण के संरक्षण के लिये जल, वायु तथा औषधियों के महत्व पर बल दिया गया है ।

त्रीणि छन्दांसि कवयो वि येतिरे
पुरुरूपं दर्शतं विश्वचक्षणम् ।
आपो वाता औषधयः
तान्येकस्मिन् भुवन अर्पितानि।।[11]

वेदों में पर्यावरण प्रदूषण पर चिन्ता व्यक्त की गयी है तथा उसको दूर करने के लिये सर्वाधिक महत्व यज्ञ को दिया गया है। शतपथ बाह्मण में कहा गया है "यज्ञो वै श्रेष्ठतमं कर्म"[12] वैज्ञानिकों ने अपने शोधों से यह सिद्ध किया है कि यज्ञ आधुनिक युग में अत्यन्त महत्व के हैं तथा उपादेय हैं। वेदों के अनुसार यज्ञ से प्राकृतिक संतुलन, पर्यावरण की सुरक्षा, वायुमंडल की शुद्धता, विभिन्न प्रकार के रोगों से छुटकारा, शारीरिक तथा बौद्धिक उन्नति तथा दीर्घायुष्य की प्राप्ति होती है। यज्ञ के माहात्म्य का वर्णन करते हुए ऋषि कहता है कि देवताओं ने सर्वप्रथम यज्ञ से यज्ञ रूपी विराट सत्ता का यजन किया।

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

श्रीमद्भगवद्गीता में यज्ञ के रहस्य का प्रतिपादन किया गया है। गीता के अनुसार समस्त प्राणी अन्न से उद्भूत हैं। अन्न की उत्पत्ति वृष्टि से होती है, वृष्टि यज्ञ से सम्भव है और यज्ञ विहित कर्मों से प्रादुर्भूत हैं। कर्म समुदाय वेद से समुद्भूत हैं एवं वेद अविनाशी परमात्मा से । यह अलौकिक यज्ञ सृष्टि के निमित्त अनादि काल से अद्यावधि पर्यन्त होता आ रहा है।

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्म समुद्भवः।।

गीता का यज्ञ रहस्य सृष्टि की उत्पत्ति का मूल है। गीता का यज्ञीय दर्शन वैदिक यज्ञीय दर्शन का ही अनुवर्तन है। वेदों में ज्ञानयज्ञ को विभिन्न प्रकार ही समस्याओं के समाधान के रूप में वर्णित किया गया है। पर्यावरण की समस्या भी उनमें से एक है। एक विचार यह भी है कि यज्ञ के धुएँ से वातावरण शुद्ध होता है।

**अध्ययन का उद्देश्य**

वेद एवं वैदिक साहित्य में निहित प्रकृति के तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि, सूर्य, वृक्ष और पर्वत इत्यादि) का अनुशीलन तथा पर्यावरण संरक्षण उन तत्वों की भूमिका।

**निष्कर्ष**

वेदों में प्रकृति के मूल तत्वों को देवता मानकर स्तुति की गयी है, क्योंकि प्रकृति का प्रत्येक कण प्राणियों के जीवन की रक्षा करता है। वैदिक ऋषि प्रार्थना करता है कि "हे पृथिवी! तेरे हरे–भरे जंगल, पहाड़ और बर्फाच्छादित पर्वत मंगलकारी हों।" वृक्ष से प्रार्थना करते हैं कि " मनुष्यों की आत्मोन्नति में सहायक हों।" जल से प्रार्थना करते हैं कि "रोग रूप पाप से सदैव बचायें।" वायु से प्रार्थना करते हैं कि "वायुमण्डल में लोकोपयोगी होकर बहे।" औषधियों से प्रार्थना करते हैं कि "पृथ्वी की सम्पूर्ण औषधियाँ तथा

वनस्पतियाँ सबके लिये कल्याणकारी हों।" सूर्य से प्रार्थना करते हैं कि "वायुमण्डल शुद्धि और समन्वय बनाये रखे।"

इस प्रकार उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वैदिक वाङ्मय में न केवल प्रकृति के समस्त तत्वों का वर्णन है अपितु वैदिक ऋषि पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक थे ओर उन्होंने पर्यावरण संरक्षण के उपाय भी खोजे थे।

**अंत टिप्पणी**

1. *ऋग्वेद 10/9/4*
2. *ऋग्वेद 10/9/7*
3. *अथर्ववेद 3/7/5*
4. *अथर्ववेद 3/21/10*
5. *ऋग्वेद 10/186/1*
6. *शुक्ल यजुर्वेद 36/1*
7. *ऋग्वेद 6/37/3*
8. *ऋग्वेद 6/48/17*
9. *अथर्ववेद 12/1/11*
10. *अथर्ववेद 10/51/1*
11. *अथर्ववेद 18/1/17*
12. *शतपथ ब्राह्मण 1/7/3/5*